हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का बहुआयामी उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

छायावाद और पंत के काव्य में प्रकृति–चित्रण

डॉ. कामिनी ओझा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग के पश्चात् का जो युग आया वह छायावाद के नाम से जाना जाता है । इस युग के प्रमुख स्तम्भ कवि जिनमें निराला, महादेवी वर्मा, प्रसाद, पंत रहे हैं । जिन्होंने भाषा, भाव, छंद, अलंकार शैली इन सभी तत्त्वों ने एक नवीन अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत हुए है। जिसे 'छायावाद' अथवा 'छायावादी कवित' का नाम दिया गया । द्विवेदी युग के कवि उपदेशात्मक व नैतिकता की अधिकता होने के कारण उसमें निरसता का भाव हो गया था । हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक कविताएँ एक ऐसी रचना है, जिसका संबंध हृदय से तथा भार–जगत से है । हृदय अनुभव करने की वस्तु है। भाव–जगत लोक के अनुभव करने की वस्तु है । लेखमाला के प्रथम निबंध 'कवि स्वातंत्र्य' में मुकुटधर जी ने कहा –''अंग्रेजी या किसी पाश्चात्य साहित्य अथवा बंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले तो सुनते ही समझ जाएँगे कि यह शब्द 'मिस्टिसिज्म' के लिए आया है।''[1]

छायावाद के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों की परिभाषा के अंतर्गत आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – ''छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए । एक तो रहस्यवाद के अर्थ जहाँ उसका संबंध काव्य–वस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है।''[2] पं. नन्द दुलारे वाजपेयी के अनुसार – ''मानव तथा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भाव है।''[3] आज हम जिसको छायावाद की कविता कहते है । उसमें थोड़ी–सी भावुकता, सांकेतिकता, रहस्य, दुरूहता, कोमलकांत पदावली, प्रकृति–प्रेम, अनेक वस्तुएँ सम्मिलित है । छायावादी कविता कोई एक कविता नहीं है । डॉ. नगेन्द्र के अनुसार – ''अंतर्मुखी प्रवृत्ति, अशरीरी प्रेम एवं उसकी अतृप्ति, अमांसल सौन्दर्य, मानव एवं प्रकृति का चेतन संस्पर्श, रहस्य–चिंतन, तितली के पंख और फूलों की पंखुरियों से चुराई कला और उन सबके ऊपर स्वप्न–सा पूरा हुआ एक मायावी वातावरण – यही छायावाद।''[4] शांतिप्रिय द्विवेदी के अनुसार ''छायावाद, काव्य की केवल एक अभिव्यक्ति ही नहीं, बल्कि इसके ऊपर एक श्रेष्ठ अभिव्यक्त भी है।''[5] डॉ. रामकुमार वर्मा छायावाद और रहस्यवाद में अंतर नहीं मानते है । उनके शब्दों में –''छायावाद वास्तव में हृदय की एक अनुभूति है । वह भौतिक संसार के गोद में प्रवेश कर अनन्त जीवन के तत्त्व ग्रहण करता है और उसे हमारे वास्तविक जीवन में जोड़कर हृदय में जीवन के प्रति एक गहरी संवेदना और आशीर्वाद प्रदान करता है।''[6] श्री रामकृष्ण शुक्ल के अनुसार – ''छायावाद प्रकृति में मानव जीवन का प्रतिबिम्ब देखता है।''[7] गंगाप्रसाद पांडेय के अनुसार –''छायावाद शब्द से ही छायात्मकता स्पष्ट है । विश्व की किसी वस्तु में एक अज्ञात सप्राण छाया की वे झांकी पाना अथवा उसका आरोप करना ही छायावाद है।''[8] डॉ. देवराज के अनुसार – ''छायावाद गीति–काव्य है, प्रकृति–काव्य है, प्रेम–काव्य है।''[9] विश्वम्भर 'मानव' के अनुसार –''प्रकृति में चेतना की अनुभूति और प्रकृति में तत्त्वों का

ISSN : 2582-9092

पारस्परिक भाव–संबंध छायावाद है।''[10] जयशंकर प्रसाद के अनुसार–''कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश–विदेश की सुन्दरता के बाह्म–वर्णन से भिन्न, जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिन्दी में उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया।''[11] महादेवी वर्मा के अनुसार–''छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब–प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी।''[12] सुमित्रानन्दन 'पंत' के अनुसार– ''नवीन सामाजिक जीवन की वास्तविकता को ग्रहण कर सकने के पहले, हिन्दी कविता, छायावाद के रूप में ह्यास युग के वैयक्तिक अनुभवों, उर्ध्वमुखी विकास की प्रवृत्तियों, ऐहिक जीवन की आकांक्षाओं – संबंधी स्वप्नों, निराशाओं और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने लगी, और व्यक्तिगत जीवन संघर्ष की कठिनाइयों से झुब्ध होकर, पलायनवाद के रूप में, प्राकृतिक दर्शन के सिद्धान्तों के आधार पर, भीतर–बाहर में, सुख–दुःख में, आशा–निराशा और संयोग–वियोग के द्वन्द्वों में सामंजस्य स्थापित करने लगी।''[13]

इन परिभाषाओं के सन्दर्भ में मन्तव्य स्वरूप यह कहा जा सकता है कि छायावाद से प्रायः प्रकृति संयोग–वियोग, आत्मकथा, मानवीकरण, रोमांटिसिज्म आदि से संबंधित अर्थ ही स्वीकारे जाते है । छायावादी काव्यधारा के आध्यात्मिक पक्ष की मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय और सांस्कृतिक है।

छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, निराला, पंत है। प्रसाद का प्रेम पथिक, आँसू, झरना, लहर और कामायनी । महादेवी वर्मा की नीहार, रश्मि, नीरजा, संध्यागीत और दीपशिखा। निराला का परिमल, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अर्चना और आराधना । पंत का वीणा, ग्रंथि, पल्लव और गुंजन प्रमुख कृतियाँ हैं। पंत की रचनाओं में व्यक्तित्त्व सशक्त प्रेरणाओं, अडिग आस्थाओं और उदात्त मानवीय मूल्यों के साथ ही राष्ट्रीयता का तारत्व अधिक है । छायावादी काव्य व्यक्तिवाद के विविध आयामों का केन्द्र है । इस संदर्भ में कहा भी गया है कि ''व्यक्तिवाद ने छायावादी कवि में यदि एक ओर वैयक्तिक अभिव्यक्ति की आकांक्षा उत्पन्न की तो दूसरी ओर सम्पूर्ण दृष्टिकोण को व्यक्तिनिष्ठ बना दिया । छायावादी कवि संसार की सभी वस्तुओं को आत्मरंजित करके देखने का अभ्यस्त हो गया। विश्व की व्यथा से स्वयं व्यथित होने की जगह वह अपनी व्यथा से विश्व के व्यथित होने की कल्पना करने लगा।''[14]

प्रकृति का मानवीकरण –

छायावादियों ने एक ओर प्रकृति का मानवीकरण करके प्रेम और रहस्य को वाणी प्रदान की वहीं दूसरी ओर उसके सुन्दर उपकरणों को प्रतीक बनाकर अपनी अभिव्यंजना शक्ति को सबल भी किया है। गंगा प्रसाद पांडेय के अनुसार–''अव्यक्त तथा अस्पष्ट सत्ता की खोज मानव प्रकृति का एक अनिवार्य स्वरूप है।''[15]

पंत जी की 'नौका–विहार', 'गुंजन' में संकलित कविताओं में एक श्रेष्ठ रचना है । इसमें छायावादी शैली प्रकृति – वर्णन का सुन्दर उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया है –

ISSN : 2582-9092

"शांत स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल !
अपलक अनंत, नीरव भूतल ।
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रांत क्लांक निश्चल !
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि – मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुंतल।
गोरे अंगों पर सिहर सिहर, लहराता तार – तरल सुंदर,
चंचल अंचल – सा नीलाम्बर !
साड़ी की सिकुड़न जिस पर, शशि की रेशमी विभा से भर,
सिमटी है । वर्तुल, मृदुल लहर!"[16]

छायावादी शैली में प्रकृति के मानवीकरण की प्रमुख विशेषता पंत के 'बादल' कविता में परम्परागत उपमानो को नवीनता के रूप में प्रस्तुत करके कवि ने अपनी मौलिक काव्य प्रतिभा का अच्छा परिचय भी दिया है–

"सुरपति के हम ही है अनुचर
जगत्प्राण के भी सहचर,
मेघदूत की सजल कल्पना
चातक के चिर जीवनधर;"[17]

प्रस्तुत पंक्तियों में छायावादी प्रवृत्ति के अनुसार गंगा का मानवीकरण किया गया है। गंगा को तापस बाला के रूप में चित्रण अत्यन्त भाव – व्यंजक एवं सांगोपांग है ।

व्यक्तिवाद की प्रधानता –

'एक तारा' कविता में कवि की कल्पना है कि तारे आकाश में नीरव और एकांकी जीवन की साधना लेकर किसी इच्छा की पूर्ति का प्रयास कर रहे है–

"आकांक्षा का उच्छ्वसित वेग
मानता नहीं बंधन – विवेक !
चिर आकांक्षा से ही थर–थर, उद्वेलित रे अहरह सागर,
नाचती लहर पर हहर लहर ।
अविरत इच्छा ही में नर्तन करते अबाध रवि, शशि उडुगन,
दुस्तर आकांक्षा का बंधन !

ISSN : 2582-9092

रे उड्डु, क्या जलते प्राण विकल ? क्या नीरव–नीरव नयन सजल !
जीवन निसंग रे व्यर्थ विफल !
एकाकीपन का अन्धकार, दुस्सह है इसका मूक भार,
इसके विषाद का रे न पार !''[18]

प्रस्तुत पंक्तियों में तारे का मानवीकरण है यह छायावाद की प्रमुख प्रवृत्ति है। इन्ही में पंत के जीवन का स्पष्ट संस्पर्श है । पंत ने 'बादल' 'चांदनी', 'छाया', 'एक तारा' कविताओं में प्रकृति के बहुत ही सुन्दर एवं संजीव चित्र प्रस्तुत है ।

रूढ़ियों का अंत –

प्रकृति विकास के माध्यम से मानव विकास का वर्णन 'युगान्त' की क्रांति भावना में नवीन मनुष्यत्व के प्रति संकेत करते हुए 'द्रुत झरो' कविता में पंत ने एक ओर पिछली वास्तविकता को बदलने के लिए ओजपूर्ण आवेश के बाद दूसरी ओर मानव के नवीन जीवन को सौन्दर्य से मण्डित करने का आग्रह भी है । वह मानवता के विकास द्वारा जीवन की पूर्णता फिर से स्थापित करने की शुभ इच्छाओं से आकुल है । इस कविता में भी यही आकुलता निरन्तर प्रवाहमान के साथ पुरातनता के प्रति व्यापक विद्रोह व्यक्त हुआ है । कवि मानव जीवन को सुन्दर बनाने के लिए सक्रिय प्रयास करता है । इसके लिए पहले प्राचीन रूढ़ियों को नष्ट–भ्रष्ट होना चाहिए–

''द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र
हे स्रस्त ध्वस्त ! हे शुष्क शीर्ण !
हिमपात पीत, मधुवात भीत,
तुम वीतराग, जड़, पुराचीन !
निष्प्राण विगत युग ! मृत विहंग
जड़ नीड़ शब्द औ' श्वासहीन,
च्युत, अस्त–व्यस्त पंखों–से तुम
झर–झर अनन्त में ही विलीन !''[19]

प्रकृति और रहस्य की प्रधानता–

छायावादी रहस्यवाद भी अपने पुरातनता के स्वरूप में उतरकर युगानुरूप में प्रकट हुआ है । 'मौन निमंत्रण' में भावों की अत्यन्त मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ ही इसमें असंतोष, जिज्ञासा, विस्मयता, कौतुहलता का समावेश भी पंत की रचनाओं में प्राप्त होता है –

''कनक छाया में, जबकि सकाल
खोलती कलिका उर के द्वार,

ISSN : 2582-9092

सुरभि पीड़ित मधुपों के बाल
तड़प, बन जाते हैं गुंजार;
न जाने ढुलक ओस में कौन
खींच लेता मेरे दृग मौन !''[20]

धर्म की प्रधानता–

पंत ने कविताओं में प्रकृति–प्रेम और कल्पना का पर्याप्त सामंजस्य स्थापित किया है। इसके साथ ही कविता में भाव–प्रवणता आने से कवि ने धर्म के प्रति मार्मिकता को प्रधानता दी और वे अधिक प्रभावशाली बन गये । 'हिमाद्रि' कविता में हिमाद्रि के सौन्दर्य को अनन्त एवं अपार बताया तथा साथ ही पौराणिक कथाओं को ग्रहण कर कवि ने भाव – व्यंजना में और भी चार चाँद लगा दिए है –

''अब भी वही वसन्त विचरता
पुष्प शरों से भर दिगन्त स्मित,
गन्धोद्धाम धरा वह ही, पाषाण
शिलाएँ पुलक पल्लवित !
अब भी प्रिय गौरा का शैशव
वर्णन कते खग पिक मुखरित,
देवदारु के ऊर्ध्व शिखर
वैसे ही शंकर–से समाधि–स्थित!''[21]

कल्पना की प्रधानता –

पंत की चाँदनी', 'छाया', 'अप्सरा' आदि कविताएँ नारी–सौन्दर्य के सुन्दर किन्तु काल्पनिक चित्र है। वे इतने सजीव नहीं कि उनमें जीवन की स्पन्दनशीलता का अनुभव हो सकें। ''प्रकृति के सौन्दर्य पर चकित होने वाला कवि आत्मा के चिरधन की खोज में निकल पड़ता है। वह मानवता का गायक बन गया। किन्तु अपनी चिर प्रेयसी प्रकृति को भी कवि नितान्त रूप से भूला नहीं सका।''[22] 'एक तारा', 'नौका विहार', 'चाँदनी' आदि रचनाओं में चिन्तन के साथ कल्पना और भावना का भी योग है। 'नौका–विहार' में जल को दर्पण मानना पंत की बहुत प्रिय कल्पना जान पड़ती है–

''चाँदनी रात का प्रथम प्रहर,
हम चले नाव लेकर सत्वर!
सिकता की सस्मित सीपी पर मोती की ज्योत्स्ना रही विचर,
लो, पालें चढ़ीं, उठा लंगर! मृदु मन्द मन्द, मन्थर मन्थर, लघु तरणि,

ISSN : 2582-9092

हंसिनी–सी सुन्दर, तिर रही, खोल पालों के पर!''[23]

छायावादी प्रवृत्ति के कारण 'नौका विहार' कविता में गंगा का मानवीकरण भी किया गया है। ''कल्पना के माध्यम से सौन्दर्य– स्वरूप का जो प्रभाव हमारे हृदय में पड़ता है वह सदैव सम्मान्य है।''[24]

वीणा, पल्लव और गुंजन में कवि की भाव और कल्पना का अभूतपूर्व संयोग हुआ है। वीणा में प्रकाशित 'प्रथम–रश्मि' नामक कविता में काव्य साधना की दृष्टि से नई किरण का प्रवेश हुआ। जिसमें कवि ने परम्परागत उपमानों के साथ मौलिक कल्पना भी सम्मिलित की गई है–

''प्रथम रश्मि का आना रंगिणि,
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ, कहाँ हे बाल–विहंगिनि!
पाया, तूने यह गाना?''[25]

छायावादी काव्य में कल्पना की महत्ता को अधिक मुखरित किया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कल्पना को भावना का नाम देते हुए लिखा है – '' जिस प्रकार भक्ति के लिए उपासना या ध्यान की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार भावों के परिवर्तन के लिए भावना या कल्पना अपेक्षित है।''[26]

'बादल', 'छाया', 'चाँदनी' कविताओं में भी कल्पना की उडान अपनी चरम सीमा को पहुच गई है। नन्ददुलारे वाजपेयी का यही विचार है कि – ''हिन्दी के क्षेत्र में पंत की कल्पना शक्ति अजेय, उनका नवनमोन्मेष अप्रतिम है। कल्पना ही पंत की कविता की विशेषता, प्रमुख आकर्षण का रहस्य है।''[27]

दार्शनिकता –

'बापू के प्रति', 'एक तारा', 'नौका विहार' आदि कविताओं में दार्शनिक उद्भावना में प्रकृति को स्थान प्राप्त हुआ। 'एक तारा' आकाश में चमकने वाला तारा नहीं बल्कि कवि की दार्शनिक भावनाओं की ज्योति से प्रकाशमय हो गया है। कभी योगी, कभी मुक्त पुरूष वे जिसने साधना के बल पर अपने जीवन में समरसता प्राप्त कर लेता है। अन्त में वह ब्रह्मा का ही रुप धारण कर लेता है। संभवतः कवि का योगी जैसी एकांकी साधना पर विश्वास नहीं है, तभी वह एकांकी को अनन्त विषाद से परिपूर्ण मानता है। जिसमें पंत के जीवन का स्पष्ट संस्पर्श है–

''गुंजित अलि–सा निर्जन अपार मधुमय लगता घन अन्धकार,
हल्का एकाकी व्यथा भार!
जगमग जगमग नभ का आँगन लद गया कुन्द कलियों से घन,
वह आत्म और यह जग दर्शन!''[28]

कवि भौतिक ''नौका विहार' में विचरन करता हुआ और प्रकृति के सौन्दर्य के रमणीक चित्र खींचता हुआ अन्त में आध्यात्मिक 'नौका विहार' का वर्णन करता है। जीव का मृत्यु के उपरान्त ब्रह्म में लीन हो

ISSN : 2582-9092

जाना भारतीय दर्शन शास्त्र की एक प्रमुख मान्यता है। इन पंक्तियों में कवि दार्शनिक शब्दावली में बोलने लगा है–

''शाश्वत नभ का नीला विकास, शारवत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विकास!
हे जगजीवन के कर्णधार! चिर–जन्म–मरण के आर–पार,
शाश्वत जीवन–नौका विहार!
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण,
करता मुझको अमरत्व दान!''[29]

पंत के अनुसार 'बापू' (बापू के प्रति) सामंत युग के सूक्ष्म के प्रतीक है। पंत ने बापू को भारत के लिए अनिवार्य माना है–

''सदियों का दैन्य तमिस्र तूल धुन तुमने कात प्रकाश–सूत;
हे नग्न! नग्न पशुता ढँक दी बुन नव संस्कृति मनुजत्व – पूत!
जग पीडित छूतों से प्रभूत, छू अमृत–स्पर्श से है अछूत!
तुमने पावन कर, मुक्त किये मृत संस्कृतियों के विकृत भूत!''[30]

पंत ने जीवन के गम्भीर प्रश्नों पर दार्शनिक ढंग से चिन्तन भी किया, जगत के नाना रूपों के एक ही चेतना को व्यक्त देखकर विश्वात्मा के जीवन–स्पन्दन का अनुभव किया। 'परिवर्तन' कविता में मनुष्य और प्रकृति के बीच रागात्मक संबंध स्थापित किया –

''एक छवि के असंख्य उडगण,
एक ही सब में स्पन्दन;
एक ही छवि के विभात में लीन,
एक विधि के रे नित्य अधीन!''[31]

इन पंक्तियों में कवि अपनी दार्शनिक विचारधारा की अभिव्यक्ति करता है। इसमें कवि की अद्वैतवादी रहस्यभावना का सुन्दर प्रस्फुटन हुआ हैं। छायावाद विश्लेषण और मूल्यांकन में भी बताया गया है कि– ''कल्पना–लोक में पलायन के अतिरिक्त छायावादी कवियों ने आध्यात्मिक क्षेत्र में जाकर जगत और जीवन के अभावों की पूर्ति करने की प्रवृत्ति दिखलायी। यद्यपि इसे बिलकुल पलायन नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह भारतीय सांस्कृतिक नवचेतना का एक उन्मेष था, फिर भी उसके साहिय की धारा जगत और जीवन के अन्य प्रमुख स्वरूपों की ओर से पराङ्मुख होने लगी।''[32] यही कहा जा सकता है कि छायावादी काव्य में प्रकृति के बाह्य सौन्दर्य में कहीं नारीमय तथा कहीं प्रकृतिमय दृश्य अन्त्यन्त मनोरम एवं आकर्षक अंकन पंत के काव्य में अधिक उपलब्ध है। छायावाद में चित्रित पंत ने प्रकृति की विविध

ISSN : 2582-9092

छवियों जैसे कोयल का गायन, तरू–तृण, सवेरा–संध्या, बादल–नदी, प्रांत–पर्वत आदि को काव्य की अमूल्य धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया है। पंत को मानव जाति के उदात्त रागात्मक गुणों के स्मरण के लिए छायावाद को सदैव ही याद किया जाएगा।

सन्दर्भ सूची –

1. छायावाद–नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ.11
2. छायावाद विश्लेषण और मूल्यांकन – श्री दीनानाथ 'शरण', प्रकाशक नव युग ग्रंथागार लखनऊ, प्रथम संस्करण 1958, पृ. 6
3. वही, पृ. 6
4. वही, पृ. 7
5. वही, पृ. 7
6. वही, पृ. 8
7. वही, पृ. 8
8. वही, पृ. 8
9. वही, पृ. 11
10. वही, पृ. 11
11. वही, पृ. 12
12. वही, पृ. 13
13. वही, पृ. 13
14. आधुनिक साहित्य की प्रवत्तियाँ – नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2013, पृ. 19
15. छायावाद और रहस्यवाद–श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक रामनारायणलाल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1941, पृ. 27
16. रश्मिबन्ध – सुमित्रानन्दन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1958, पृ. 65
17. वही, पृ. 42
18. वही, पृ. 65
19. वही, पृ. 69
20. वही, पृ. 47

21. वही, पृ. 87
22. साहित्यिक निबन्ध – सं. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन दिल्ली, नवम् सरंस्करण 1988, पृ. 586
23. रश्मिबन्ध – सुमिगानन्दन पन्त, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1958, पृ. 66
24. छायावाद और रहस्यवाद – श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशन राम नारायण लाल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1941, पृ. 37
25. रश्मिबन्ध – सुमित्रानन्दन पंत, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1958, पृ. 34
26. चिन्तामणि – भाग 1 – रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 219–220
27. छायावाद विश्लेषण और मूल्यांकन – लेखक श्री दीनानाथ 'शरण', प्रकाशन नवयुग ग्रंथालय, प्रथम संस्करण, 1958, पृ. 201
28. रश्मिबन्ध – सुमित्रानन्दन पंथ, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्कारण 1958, पृ. 65
29. वही, पृ. 67
30. गाँधी अभिनन्दन – ग्रन्थः सं. सोहनलाल द्विवेदी, उत्तर प्रदेश गाँधी शताब्दी समिति, संस्करणः 2 अक्टूबर 1969, पृ. 58
31. रश्मिबन्ध – सुमित्रानन्दन पंत, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1958, पृ. 56–57
32. छायावाद युग – शम्भूनाथ सिंह, प्रकाशक सरस्वती मंदिर बनारस, प्रथम संस्करण 1952, पृ. 97
33. छायावाद विश्लेषण और मूल्यांकन – लेखक श्री दीनानाथ 'शरण' प्रकाशन नवयुग ग्रंथालय इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1958, पृ. 201

सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)